



अधिकतम : 28°C
न्यूनतम : 24°C

आबरे छुपावा नहीं, छापवा है

शाह टाइम्स

मुद्रावाद, शक्वार 1 अगस्त 2025 मुद्रावाद संस्करण: वर्ष 22 अंक 352 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

C M Y K



विस्तृत खबरों के लिए QR
कोड स्कैन करें।
मुफ्त पढ़ें E-paper

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

C M Y K

ट्रम्प के बिंगड़ते बोल

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पूरी तरह बेलगाम होते दिखाई दे रहे हैं। वे किसके विषय में कब क्या बोल दें कोई नहीं जानता। उनके फैसले भी बेहद अटपटे दिखाई दे रहे हैं। भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने के बाद अब उन्होंने कह दिया है कि भारत और रूस की इकोनॉमी डेंड हो चुकी है। आम बोलचाल में डेंड इकोनॉमी उस स्थिति को कहते हैं जब किसी देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह टप हो जाए या बिल्कुल सुस्त पड़ जाए। यह एक तरह से किसी देश के दिवालियापन जैसा हो सकता है, जहां कोई नौकरी रहती है तो लोगों की कमाई बढ़ती है। लोग आधिक तरीं में फैस जाते हैं।

अब उन्होंने यह बात किस आकलन के आधार पर कही यह तो वही जानें, लेकिन इससे यह तो पता चलता ही है कि वह भारत को लेकर बेहद ही बेरुखा रुख अपना रहे हैं और यह तब है जब वह भारत के मित्र देशों की श्रेणी में भी रखते दिखाई देते हैं। ट्रम्प को समझना होता कि हर देश की अपनी सीमाएँ हैं अपने हित हैं, उसको उन्होंने के विसाव से फैसले लेने होते हैं। जैसके गुरुवार को उद्योगमंत्री पीयूष गोविल ने लोकसभा में कहा था कि सरकार साधीय होता की रक्षा के लिए हर आवश्यक कदम उठाएगी। सरकार अपने देश के किसानों, मजदूरों, सक्षम, लघु व मजदूरों उद्योगों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। गोविल ने यह भी कहा कि अब तक अमेरिका के साथ चार दौर की बातचीत हो चुकी है और बातचीत अभी दूरी नहीं है।

लगता है कि ट्रम्प को इससे कोई मतलब नहीं है वह बेहद जल्दबाजी में है और वह टेंड को लेकर बेहद आकामक मुद्रा में है। वह किसी की सुनने के लिए भी भी तैयार नहीं है। उन्हें किसी की लाभ-हानि से कोई लेना नहीं है। उन्हें केवल अमेरिका का हित दिखाये रहा है। उनकी तमाम कोशिश है कि अमेरिका को जो व्यापार में तमाम फायदे मिलें, जबकि दूसरे देशों को भी फायदा हो इससे उन्हें कोई सरोकार दिखाई नहीं दे रहा है। डोनाल्ड ट्रम्प को समझना चाहिए कि उनकी अर्थव्यवस्था बेहद मजबूत है और इस मजबूती के चलते उनका कोई दायित्व भी गोरी विकासशील देशों के प्रति बनता है। आंधिक बड़ा वही कहलाता है, जो अपने छांटे देशों का भी ख्याल रखे, लेकिन डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारतीय आयात करने पर पैदा हो रही है। उन्हें किसी को मजबूरी को समझ रखने के मूड में नहीं है और न ही कि किसी देश की मजबूरी को खुपा भी नहीं है। भारत के सदर्भ में वह खुलकर कह रहे हैं, क्योंकि भारत रूस से बड़ी सम्झौते में सैन्य साज़ि-सामान पट्टोंतियम पदार्थ व गैस की आपूर्ति कर रहा है। इसलिए वह भारत पर टैरिफ लगा रहे हैं। वह नहीं चाहते कि रूस के साथ कोई व्यापार करे। यह कैसे सध्वन है। हर देश अपनी जरूरत के लिए व्यापार करता है। अगर रूस हमें सस्ते दामों पर तेल व गैस दे रहा है, तो इस पर अमेरिका को क्यों आपत्ति होनी चाहिए, लेकिन अपत्ति हो रही है। ट्रिप्ल अपार्टमेंट ही नहीं वह एक तरह से दृढ़ी भी देना चाहता है। टैरिफ लगाना यह दृढ़ देने का ही एक तरीका है।

केंद्र सरकार अपने आश्वासन पर खरी उतरे

उमीद है कि अमेरिकी टैरिफ को लेकर केंद्र सरकार अपने आश्वासन पर खरी उतरी, परंतु देश के बाबूजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारतीय आयात पर 1 अगस्त से 25 प्रतिशत शुल्क तथा रूस से तेल आयात करने पर पैदा होने वाली अपर्मान्तर्भास्त्र में बदलकर देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित नहीं होने देगी, इसको लेकर देश को दिए गए इस आश्वासन पर कि किसान, छांटे व मजदूरों उद्योग और राष्ट्रपति से एक समझौता नहीं करेगी, इस पर खरी उतरकर दिखाएगी, भारत गरीबों और महानवाहिका लोगों का देश है, हाथ को आया काम देने के साथ देश को आगे बढ़ाने को नीति बनाकर उस पर सही से अपल होगा चाहिए।

-सुश्री मायावर्ती, बसपा सुप्रीमा



अपमानक इतनी फुर्ती में क्यों है डीजीसीए

ज वही कभी कोई विमान हादसा होता है या होते-होते टटा जाता है तो भारत का नागर विमान महानिदेशालय या डीजीसीए और एयरक्राफ्ट एक्सीलैंड इंजीनियरिंग ब्यूरो एसी घटना की जांच करता है। ऐसे समालों में जांच पूरी होने तक डीजीसीए उस विमान के पायलट के छक्के का गाड़ करता है, जो उनका फूज़ है? यदि डीजीसीए द्वारा ऐसे निरीक्षण सम्पर्क समय पर होते रहे तो ऐसे हादसे टाले जा सकते हैं। हाल ही में भारत के एवाएशन इतिहास में भड़ा हादसा अहमतावाले में हुआ।

उसके बाद से ही तमाम जानकारियां सामने आने लगी कि एयर इंडिया के इस विमान हादसे में किसकी गलती हो सकती है। क्या यायतर दोषी है? क्या विमान बनाने वाली कंपनी दोषी है? क्या विमान बनाने वाली एंड्रोजीसीए के अधिकारियों को हवाई जहाज की नियमित अंतर्जाल और रख-रखाक की जांच करता है, जो उनका फूज़ है? यदि डीजीसीए द्वारा ऐसे निरीक्षण समय-समय पर होते रहे तो ऐसे हादसे टाले जा सकते हैं। हाल ही में भारत के एवाएशन इतिहास में भड़ा हादसा हो सकता है।

उसके बाद से ही तमाम जानकारियां सामने आने लगी कि एयर इंडिया के इस विमान हादसे में किसकी गलती हो सकती है। क्या यायतर दोषी है? क्या विमान बनाने वाली कंपनी दोषी है? क्या विमान बनाने वाली एंड्रोजीसीए के अधिकारियों को हवाई जहाज की नियमित सामान्य-समय साथ ही यह सुनने की नहीं मिलता कि क्या भारत का नागर विमान महानिदेशालय यानी डीजीसीए अपना काम जिम्मेदारी से कर रहा था? यदि



हां तो फिर ऐसा हादसा कैसे हो गया? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

एयर इंडिया के बोइंग विमानों में अनानक एक के बाद एक हादसों का होना एक गंभीर मुद्दा अवश्य है, लेकिन जिस तरह इन हादसों के बाद डीजीसीए अनानक हरकत में आगा है वह कई सवाल उठाता है। क्या डीजीसीए द्वारा नियमित रूप से ऑफिट भी किया जाता है? यदि इसमें कोई कमी होती है तो डीजीसीए द्वारा संबोधित एयरलाइन को नोटिस दिया जाता है।

वहीं यदि किन्हीं कारणों से डीजीसीए द्वारा ऑफिट को केवल औपचारिकता के लिए किया जाए तो अन्यरक्षी के चलते विमान हादसा कभी भी हो सकता है। ऐसा देखा गया है कि जब भी कोई बड़ा विमान हादसा होता है तो डीजीसीए तूतंत रहकर में आकर एंड्रोजीसीए के लिए बोर्डिंग द्वारा करता है। इन ऑफिटों में डीजीसीए विकाश करता है कि वह किसी भी तरीके से लोगों की गम्भीरता (जीरो टॉलरेंस) खोता है, लेकिन व्याक्ति के लिए वैज्ञानिक सांख्य रखने का नीति बनाकर उसे करना चाहिए।

सियाम की परछाइयाँ: मंदिर, युद्ध और वैरिक शतरंज



उखाड़ना, और ASEAN के भीतर से फाड़

अभिजात वर्ग और राजा के आदमी:

खेल के भीतर खेल

राजा के भरोसेमंद लोग, जो सिर्फ सीमा पर तैनात कमांडर नहीं, बल्कि एक मानसिकता के बाहक हैं, जो थाईलैंड को ग्लोबल साउथ के उदय से काटकर, पश्चिम की गोद में बिठाना चाहते हैं। बैंकोंक का अभिजात वर्ग, जो BRI और BRICS के उदय को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है। ये वे लोग हैं जो इतिहास से अधिक लाभ में विश्वास करते हैं और मंदिरों के नाम पर युद्ध बेचते हैं, लेकिन लाभ के लिए शार्ट खरीदते हैं।

अभिजात वर्ग और राजा के आदमी: खेल के भीतर खेल

राजा के भरोसेमंद लोग, जो सिर्फ सीमा पर तैनात कमांडर नहीं, बल्कि एक मानसिकता के बाहक हैं, जो थाईलैंड को ग्लोबल साउथ के उदय से काटकर, पश्चिम की गोद में बिठाना चाहते हैं। बैंकोंक का अभिजात वर्ग, जो BRI और BRICS के उदय को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है। ये वे लोग हैं जो इतिहास से अधिक लाभ में विश्वास करते हैं और मंदिरों के नाम पर युद्ध बेचते हैं, लेकिन लाभ के लिए शार्ट खरीदते हैं।

(लेखक वरिष्ठ प्रकार एवं विश्वास की राजनीतिक मामलों पर गहरी पकड़ रखते हैं, ये विचार उनके निजी विचार हैं)

अपमान के लिए महिलाएं खुद जिम्मेदार



निर्मला सितारमाणी

मारे देश में अनेकानेक स्वयंभू संस्थाएँ, प्रवचनकर्ता, ज्योतिषी व धर्मगुरु टीवी स्कॉन की शोभा बढ़ा हैं। ऐसे कई स्वयंभू संस्थाएँ व प्रवचनकर्ताओं का प्रशंसन एवं रक्षण देखता है।

क्या व्यापारी को देखता है कि जिस विवाह के लिए विवाहित होनी चाहिए। इसलिए लड़की हो या फिर लड़का दोनों को चरित्रवान होना चाहिए।

यह कहकर माफ़ा भी नहीं है। यह कैसे रहता है कि जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है। यह कैसे रहता है कि जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है। यह कैसे रहता है कि जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है।

जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है, वह कैसे रहता है। यह कैसे रहता है कि जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है। यह कैसे रहता है कि जिस विवाह के लिए रक्षण देखता है।

का सामना करना पड़ा। उस समय टीवी एंकर द्वारा उनके

